कामधेनु किसान मितान

छत्तीसगढ़ कामधेनु विश्वविद्यालय

कृषि विज्ञान केन्द्र अंजोरा,दुर्ग

अंक-4 वेबसाइड : www.kvkdurgcg.org वर्ष-3

अप्रैल - जून 2015

संरक्षक

प्रो. उमेश कुमार मिश्र

माननीय कुलपति

छ.ग. कामधेनु विश्वविद्यालय

प्रेरणा स्त्रोत

डॉ. अनुपम मिश्रा

आंचलिक परियोजना

निदेशक जोन-7

(भा.कृ.अनु.परि.) जबलपुर

मार्ग दर्शक

डॉ.पी.एल. चौधरी

निदेशक विस्तार सेवाएं

छ.ग.कामधेनु विश्वविद्यालय

प्रधान संपादक

डॉ. डी.भोसले

कार्यक्रम समन्वयक

कृ.वि.के. अंजोरा,दुर्ग

संपादक

डॉ. एस.के. थापक

विषय वस्तु विशेषज्ञ

कृ.वि.के. अंजोरा

सह संपादक

श्री यू.के. पटेल

श्री रोशन साहू

श्रीमती सोनिया खलखों

कृषि विज्ञान केन्द्र, अंजोरा दुर्ग में खरीफ पूर्व किसान मेला एवं सगोष्ठी 2015 का आयोजन

छत्तीसगढ़ कामधेनु विश्वविद्यालय अंर्तगत् संचालित कृषि विज्ञान केन्द्र अंजोरा दुर्ग द्वारा दिनांक 24/06/2015 को खरीफ पूर्व किसान मेला 2015 का आयोजन हुआ। मेले में कृषि विज्ञान केन्द्र, अंजोरा दुर्ग, पशुचिकित्सा पशुपालन महाविद्यालय अंजोरा दुर्ग, मत्स्यकी महाविद्यालय, कर्वधा, दुग्ध प्रोद्योगिकी महाविद्यालय रायपुर के स्टाल पर किसानों को विश्वविद्यालय द्वारा बनायी गयी तकनीकों का प्रदर्शन एवं जानकारी उपलब्ध करवायी गयी। मेले में छत्तीसगढ़ शासन के कृषि विभाग, पशुपालन विभाग, उद्यानिकी विभाग, मात्स्यकी विभाग के लगाये गये स्टालो पर शासन की विभिन्न योजनाओं की जानकारी उपलब्ध करवायी गयी। इसके अतिरिक्त जैविक कृषि उत्पाद की स्टाल पर विभिन्न उत्पादो का प्रदर्शन किया गया।

मेलें में मुर्गियों की कड़कनाथ, ग्राम प्रिया, वनराजा प्रजातियाँ एवं बकरियों की बारबरी, सिरोही एवं जमनापारी प्रजातियॉ तथा गायो की साहीवाल एवं गिर प्रजातियॉ किसानो के आर्कषण का केन्द्र रहे।

क्रार्यक्रम के मुख्य अतिथि माननीय श्री बृजमोहन अग्रवाल, कृषि, पशुपालन, मछली पालन एवं जल संसाधन विभाग, छ.ग. शासन, अध्यक्ष माननीया श्रीमती रमशीला साहू महिला, बाल विकास एवं समाज कल्याण विभाग छ.ग. शासन थे। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि माननीय श्री तोखन साहू संसदीय सचिव, छ.ग. शासन, माननीया श्रीमती माया बेलचंदन, अध्यक्ष जिला पंचायत–दुर्ग, श्री थानूराम साहू , उपाध्यक्ष जिला पंचायत दुर्ग, श्री प्रीतपाल बेलचंदन, अध्यक्ष सहकारी संघ दुर्ग, छत्तीसगढ़ एवं कामधेनु विश्वविद्यालय के कुलपति माननीय प्रो (डॉ.) यू.के. मिश्र थे ।

इस अवसर पर क्रार्यक्रम के मुख्य अतिथि माननीय श्री बृजमोहन अग्रवाल जी ने सभा को सबोधित करते हुये बताया कि आज समय आ गया है कि किसान जैविक खेती अपनाएं और भूमि की उर्वरता को बचाएं। जैविक कृषि उत्पाद मनुष्यों के स्वास्थ्य के लिये लाभकारी है। इस अवसर पर कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा प्रकाशित कृषक हितैषी योजनाएं पुस्तिका का विमोचन किया गया। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि एवं कामधेनु विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. यू. के. मिश्र ने बताया कि किसानो तक तकनीकी जानकारियॉ पहुॅचाने के लिये इस तरह के आयोजन आगे भी आयोजित किये जाते रहेगे।

प्रक्षेत्र में जैविक खेती उत्पादन

कृषि विज्ञान केन्द्र अंजोरा, दुर्ग में रासायनिक उर्वरकों, पौध संरक्षण दवाएँ उपयोग किए बिना, जैविक तरीके से विभिन्न सब्जी फसलों जैसे– बैगन, टमाटर, भिण्डी, गिलकी, बरबटी का उत्पादन उन्नत तकनीक अपनाकर उत्पादित किये जा रहे है, जिसे प्रदर्शनी के रूप में दुर्ग जिले के कृषकों एवं अन्य कृषकों को प्रक्षेत्र भ्रमण के माध्यम से सब्जी उत्पादन की उन्नत तकनीक की जानकारी दी जा रही है। प्रक्षेत्र में सब्जियों के अतिरिक्त स्वीटकार्न, बेबीकार्न एवं चारा हेतु मक्का का उत्पादन किया जा रहा है।

Kothari Print Durg 0788-2324938

विगत तीन माह की गतिविधियां एवं प्रस्तावित गतिविधियां

कृषकों एवं ग्रामीण महिलाओं के लिए प्रषिक्षण

विगत तीन माह की गतिविधियां			आगामी तीन माह की गतिविधियां		
संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी	संख्या	अवधि	संभावित प्रशिक्षणार्थी
09	09	280	22	22	680

ग्रामीण युवाओं के लिए प्रशिक्षण

विगत तीन माह की गतिविधियां			आगामी तीन माह की गतिविधियां		
संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी	संख्या	अवधि	संभावित प्रशिक्षणार्थी
02	02	56	05	05	125

सेवारत विस्तार कर्मियों हेतु प्रशिक्षण

विगत तीन माह की गतिविधियां			आगामी तीन माह की गतिविधियां		
संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी	संख्या	अवधि	संभावित प्रशिक्षणार्थी
–	–	–	03	03	90

प्रक्षेत्र दिवस कार्यक्रम

विगत तीन माह की गतिविधियां			आगामी तीन माह की गतिविधियां		
संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी	संख्या	अवधि	संभावित प्रशिक्षणार्थी
–	–	–	02	02	56

विस्तार गतिविधियॉ

क्र.	विषय	विगत तीन माह	आगामी तीन माह
1	मासिक कार्यशाला	03	03
2	वैज्ञानिकों का प्रक्षेत्र भ्रमण	32	50
3	कृषकों द्वार कृषि विज्ञान केन्द्र का भ्रमण	490	300
4	प्रसार पत्रिका / लेख	25	316
	कुल	550	368

प्रक्षेत्र परीक्षण कार्यक्रम

क्र.	शीर्षक	क्षेत्रफल/हे	लाभान्वित कृषक
1	टमाटर में रोग रोधी किस्म अर्का रक्षक के प्रभाव का आंकलन	1.6	06
2	लौकी की उत्पादकता बढ़ाने हेतु बोरान के पर्णीम छिड़काव के प्रभाव का आंकलन	1.6	06
3	सोयाबीन फसल में सलफर पोषक तत्व का आंकलन	0.8	04
4	धान फसल में मृदा परीक्षण आधार पर उर्वरक प्रयोग का आंकलन	0.8	04
5	धान के शीतगलन रोग प्रबंधन हेतु जैवनाशकों एवं पंचगव्य का आंकलन	1.6	04
6	धान में तना छेदक प्रबंधन हेतु जैविक कीटनाशकों का आंकलन	1.6	04
7	मक्का हरा चारा उत्पादक का आंकल	1.6	04
	कुल	9.6	32

अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन

क्र.	शीर्षक	क्षेत्रफल/हे	लाभान्वित कृषक
1	बैगन में तना एवं फल छेदक कीट नियंत्रण हेतु लारविन (कीटनाशक) का प्रभाव	4.8	10
2	धान फसल में समन्वित पोषण प्रबंधन का प्रदर्शन	4.8	12
3	धान के प्रमुख फूंद जनित रोग प्रबंधन हेतु फफूंद नाशकों का आंकलन	4.8	12
4	मक्का हरा चारा उत्पादन प्रबंधन	4.8	12
	कुल	19.2	46

अधिकारियों द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र का भ्रमण

रासायनिक विधि से खरपतवार नियंत्रण

सब्जी	खरपतवार नाशक का नाम	व्यापारिक नाम	मात्रा प्रति हे	छिड़काव करने का समय
टमाटर मिर्च	पैडीमिथालिन (30 ई.सी.)	स्टॉम्प	3 लीटर	रोपाई के बाद हल्की सिंचाई के बाद
बैगन,शिमला मिर्च	फ्लुक्लोरेलिन (45 ई सी)	बासालीन	16 लीटर	रोपण से पहले
भिण्डी	फ्लुक्लोरेलिन (45 ई.सी.)	बासालीन	225 लीटर	बीज बोने से पहले
फ्रैंचबीन गाजर, लौकी, करेला,	पैडीमिथालिन (30 ई.सी.)	स्टॉम्प	3 लीटर	बोने के 48 घंटे के भीतर छिड़कें रोपाई के बाद हल्की सिंचाई के बाद
मैथीपालक	पैडीमिथालिन (30 ई.सी.)	स्टॉम्प	3 लीटर	बोने के 1–2 दिन बाद

धान सोयाबीन में रोग नियंत्रण

फसल	रोग	नियंत्रण		
		रोग सहनशील किस्म	बीजोपचार/कि.बीज	छिड़काव/एकड़
1. धान	झुलसा (ब्लास्ट)	बम्लेश्वरी, आई.आर. 36, इंदिरासोना, कर्मा मासुरी	ट्राइसाइक्लाजोल (बीम) 2 ग्रा., कार्बेन्डाजिम या केप्टान 3 ग्रा.	यूडोमोनास फ्लोरिसेंस 1 कि.ग्रा. ट्राइसाइक्लाजोल (बीम या बान) 120 ग्रा. या आइसोप्रोथियोलेन (फ्यूजीवन) 200 मिली
	भूरा धब्बा	दंन्तेश्वरी, इंदिरा सुगंधित धान–1, आई.आर.–64	कार्बेन्डाजिम+मेंकोजेब (साफ सुपर) 2 ग्रा.	प्रोपीकोनाजोल (टिल्ट) 200 मिली. या क्लोरोथेलोनील (कवच) 200 ग्रा.
	शीथ रॉट या शीथ ब्लाईट	एम.टी.यू.–1001, एम.टी. यू.–1010, आई.आर. 36	कार्बेन्डाजिम+मेंकोजेब (साफ सुपर) 2 ग्रा·	स्यूडोमोनास फ्लोरिसेंस या बेलीडामाइसिन 400 ग्रा. हेक्साकोनाजोल (कोन्टाफ) या प्रोपीकोनाजोल (टिल्ट) 300 मिली,
	कूट कलिका या फाल्स स्मट रोग	आई आर–22, आर–28, विजया, पंत संकर धान–1	बीजों का चयन 17 प्रतिशत नमक घोल से करे	मेंकोजेब (डायथेन एम–45) या ब्लिटाक्स–50 500 ग्रा
	जीवाणु जनित झुलसा या बी. एल.बी.	महामाया, कर्मा मासुरी, बम्लेश्वरी,	गर्म पानी उपचार 53 डिग्री ताप पर 30 मिनट, स्ट्रेप्टोमाइसिन 1.5 ग्रा. +केप्टान 20 ग्रा.	स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 50 ग्र.+कापॅर आक्सीक्लोराइड 500 ग्र., या एग्रीमाइसिन 7.5 ग्राम + कॉपर आक्सीक्लोराइड 500 ग्र.
2. सोयाबीन	गेरूआ रोग	इंदिरा सोया –9, जे.एस.–335, जे.एस.–80–21	कार्बेन्डाजिम+मेंकोजेब (साफ सुपर) 2 ग्रा.	हेक्साकोनाजोल (कोन्टाफ), प्रोपीकोनाजोल (टिल्ट) या ट्राइडिमेफोन 300 मिली,
	मोजेक रोग	जे·एस·–97–52	–	डिमेटोन मिथाईल 25 ई.सी. 300 मि.ली. या डाईमेथोएट 30 ई.सी. 250 मि.ली.

समसामयिक सलाह

अप्रैल

- मृदा संरचना में सुधार हेतु अकरस जुताई का कार्य करें।
- टमाटर मिर्च मे फलीछेदक का प्रकोप होने पर क्विनालफास 25 ई.सी. का 800 मि.ली. प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
- टमाटर, मिर्च, बैगन, भिण्डी तथा बरबटी आदि सब्जियों के बीज तैयार करने का उचित समय हैं।
- आम, नींबू वर्गीय एवं अन्य फसलों में सिंचाई प्रबंधन करें।
- गन्ने की पेड़ी फसल में तनाछेदक का प्रकोप होने पर फोरेट 10 जी दानेदार दवा का 10 किलो प्रति हेक्टेयर की दर से उपयोग करें।
- गन्ने की शीतकालीन फसल में मिट्टी चढ़ाने का कार्य करें।
- चारे की फसल (मक्का, ज्वार, नेपियर) की बुवाई करें।
- भुट्टे के लिए मक्के की बुवाई करें।
- लॉन या हरियाली लगाने की व्यवस्था करें।
- आलू, प्याज, लहसून आदि सब्जियों की खुदाई एवं भण्डारण करें।
- जाल चलाकर मछलियों की निकासी विक्रय हेतु कर लें।
- पुराने तालाबों की मरम्मत एवं नये तालाब निर्माण का कार्य करें।
- पशु शालाओं के अन्दर धूप के प्रभाव को कम करने के लिए छत पर पुआल फैला दें। छत की ऊपरी भाग में उजले या हल्के रंग से एवं भीतरी भाग में काले या गहरे रंग से पेंट करें।
- गुलाब की क्यारियों और गमलों में 3–4 दिन के अंतराल में पानी देते रहें और महीने में एक बार कीटाणुनाशक दवाईयों का छिड़काव करें।
- कद्दूवर्गीय फसलों में लाल भृंग, फल मक्खी कीटों के नियंत्रण हेतु बीज बुवाई के पहले कार्बोड्रिल 10 प्रतिशत पूर्ण गड्ढ़ों में मिलाना चाहिए।

मई

- नीबूं वर्गीय पौधों की सूखी तथा केन्कर से ग्रसित शाखाओं को काटकर जला दें तथा 5:5:50 बोर्डो पेस्ट का उपयोग करें।
- नर्सरी की जमीन की जुताई कर पानी दें तथा पालीथीन की 100 गेज मोटी रंगहीन परत से 15 से 20 दिन के लिए ढांक दें।
- हल्दी, घुईयॉ, अदरक हेतु खेत की तैयारी करें ! नए फल बाग लगाने के लिए गड्ढ़ो की खुदाई करें एवं बगीचों का रेखांकन करें।
- तैयार लॉन से खरपवार निकाल कर सफाई करनी चाहिए और पौधों को पानी देना चाहिए।
- टमाटर तथा मिर्च में फलछेदक की प्रकोप होने पर क्विनवालफास 25 ई.सी. का 800 मिली. प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
- मृदा संरचना सुधार हेतु अकरस जुताई करें एवं कार्बनिक खाद (एफ.वाय.एम. / घुर्वा खाद) खेतों में वितरित करें।
- मिट्टी का नमूना निकालने के लिये व्ही. आकार का गड्ढा खोदकर 10–15 सेमी. तक का नमूना निकालकर पूरी जानकारी के साथ मिट्टी परीक्षण प्रयोगशाला में जमा कर देवें।
- पानी की सुविधा उपलब्ध हो, तो हरी खाद हेतु सन व ढेंचा को लगावें।
- भूमिजनित रोगो के नियंत्रण हेतु खेत की जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करें।
- बकरियों में एंटोरोटॉक्सीमिया का टीका लगवाएँ। इस हेतु निकट के पशु चिकित्सालय / पशु औषधालय में संपर्क करें।
- पशुओं को पीने के पानी की भरपूर मात्रा देंवें एवं ध्यान रहे की पीने का पानी ठंडा हो !
- पशुओं को दिन के ठंडे समय अर्थात सुबह एवं सायंकाल में दाना मिश्रण (संतुलित आहार) देवें।
- लू लगने पर पशु को नमक–चीनी का घोल उपलब्ध कराने की व्यवस्था करें। इस हेतु 10लीटर पानी में 1 कि.ग्रा. चीनी 50 ग्राम नमक तथा 5 से 10 नीबूं निचोड़कर घोल तैयार करें।
- मुर्गियों को पानी के बर्तन भरकर रखें।
- मुर्गियों एवं दुधारू पशुओं को एन्टीस्ट्रेस विटामिन (ए.डी.ई.के.) की उचित खुराक दें।
- बकरियों के लिये बबूल की फल्लियॉ तोड़कर संग्रहित करें।

जून

- सोयाबीन एवं अरहर के लिये जमीन की तैयारी कर बुवाई करें।
- धान की कतार बोनी तथा खुर्रा बोनी करें।
- बोता धान में नींदा नियंत्रण हेता आक्साडायर्जिल (रस्ट, टॉप स्टार) दवा 3 लीटर प्रति हेक्टेयर बुवाई के 3 दिन के अंदर डालें।
- गन्ने में मिट्टी चढ़ाने का कार्य पूर्ण करें।
- सब्जियों की पौधशाला हेतु क्यारी निर्माण, भूमि उपचार एवं क्यारी में बीजों की बुवाई करें।
- बरसात की फसल हेतु कद्दुवर्गीय सब्जियों के बीजों की बुवाई करें।
- मौसमी फूलों की पौधशाला हेतु क्यारी निर्माण एवं बीज की बुवाई करें।
- तरोई, लौकी, करेला, बरबटी आदि सब्जियों को बोआई करें तथा बेलों को चढ़ाने के लिए मचान बनाएँ।
- सूरन, अरबी, हल्दी आदि फसलों की बुवाई का कार्य पूर्ण करें।
- धान के पुस्ट बीजों का चयन 17 प्रतिशत नमक घोल से करें तथा पुष्ट बीजों को कार्बेन्डाजिम (2 ग्राम / किलो बीज) से उपचारित करें।
- मेड़ों पर उगे हुए पौधों को जलाकर नष्ट कर दें ।
- मशरूम का नया बीज (स्पान) तैयार करके रख लें।
- धान की अनुशंसित किस्म इंदिरा बरानी–1, राजेश्वरी, कर्मामासूरी प्रयोग करें।
- धान में उर्वरक की मात्रा बौनी किस्मों 120 : 60 : 40 और ऊँची किस्मों में 60 : 40 : 30 प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें।
- सोयाबीन में उर्वरकों की मात्रा 20 : 60 : 40 प्रति हेक्टेयर रखें !
- पालतू पशुओं में गलघोटू एवं एकटंगिया रोग प्रतिरोधी टीकाकरण करें।
- पशुओं को कृमिनाशक दवा का खुराक दें।
- खरीफ फसल के लिए चारा फसलों की बुवाई करें।
- पशु शालाओं एवं पशु आहार गोदामों की छतों की मरम्मत करें ।

प्रेषक :
कार्यक्रम समन्वयक
कृषि विज्ञान केन्द्र अंजोरा, दुर्ग
दूरभाष क्रमांक 0788– 2623461, 3292046

कामधेनु किसान मितान की सदस्यता शुल्क 30 / रू. वार्षिक कार्यालय में जमा करें

बुक पोस्ट

सेवा में,
श्री / श्रीमती / डॉ. .....
.....
.....